IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनानाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

यक्षेन्द्र सिंह चुण्डावत
शोधार्थी समाजकार्य
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

सामाजिक प्रगति के लिए महिला सशक्तिकरण महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाओं को अक्सर शैक्षिक, सामाजिक, वित्तीय, तकनीकी और राजनीतिक जैसे विभिन्न डोमेन में संसाधनों की कमी के कारण महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालांकि, कई महिलाएं इन समस्याओं को दूर करने, बाधाओं को दूर करने या उनके सशक्तिकरण को बढ़ाने के तरीके के रूप में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में शामिल होने लगी हैं। इस पत्र का उद्देश्य एसएचजी के संचालन की रूपरेखा तैयार करना और गरीब ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों को उजागर करना है। साहित्य समीक्षा के निष्कर्षों से पता चला कि एसएचजी महिलाओं को सशक्त बनाने में बहुत मदद करते हैं। वे महिलाओं के जीवन और उनके आर्थिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन रहे हैं। एसएचजी में शामिल होने के बाद, महिलाएं आर्थिक पहलू में अपने परिवारों के लिए कुछ करने में सक्षम हैं और अपने परिवार के लिए निर्णय लेने में भी अपनी भूमिका निभाती हैं।

कीवडः स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक–आर्थिक विकास, चुनौतियां.

महिला सशक्तिकरण आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और जागरूकता से निकटता से जुड़ा हुआ है। इसमें निर्णय लेने के कौशल और लिंग संवेदीकरण (पांडा, 2017) भी शामिल हैं। भारत में, स्वयं सहायता समूह वित्तीय सहायता और अतिरिक्त सहायता सेवाओं के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने का एक प्रभावी साधन साबित हुए हैं। लैंगिक असमानता न केवल एक सामाजिक चुनौती है, बल्कि एक महत्वपूर्ण आर्थिक बाधा भी है। स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) स्वैच्छिक संघ हैं, जहां जरूरतमंद अपनी आम समस्याओं का समाधान करने, एक–दूसरे की मदद और समर्थन करने और उनकी भलाई को परिष्कृत करने के लिए एक साथ आ सकते हैं। ये समूह आम तौर पर मानसिक स्वास्थ्य, व्यसन वसूली, वित्तीय स्थिरता और सामाजिक सशक्तिकरण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्तिगत विकास, कौशल–निर्माण और पारस्परिक सहायता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एसएचजी आमतौर पर ऐसे व्यक्तियों से बने होते हैं जो शामिल होने का विकल्प चुनते हैं क्योंकि उनके पास साझा हित या चिंता है।

सदस्य समान अनुभव और चुनौतियां साझा करते हैं, एक दूसरे को भावनात्मक और व्यावहारिक समर्थन प्रदान करते हैं। सदस्य समस्याओं को हल करने, संसाधनों को साझा करने और कठिनाइयों को दूर करने में एक दूसरे की मदद करने के लिए मिलकर काम करते हैं। एसएचजी का उद्देश्य विचारों को साझा करने, कौशल विकसित करने और सामूहिक कार्रवाई करने के लिए एक मंच प्रदान करके सदस्यों को सशक्त बनाना है। कई एसएचजी एक सपाट संरचना के साथ काम करते हैं, जहां निर्णय सहयोगात्मक रूप से किए जाते हैं, और कोई भी व्यक्ति दूसरों पर शक्ति नहीं रखता है। समूहों से परिचित होने की उम्मीद की जाती है ताकि किसी को भी हितों के संबंध में टकराव की भावना न हो और सभी बिना किसी हिचकिचाहट के शामिल हो सकें, (कुमारी और सहरावत, 2011)। यह व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है कि परिवार की आय में महिलाओं का योगदान पोषण, आर्थिक स्थिरता और घर के भीतर शैक्षिक अवसरों में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। हालांकि, ऐतिहासिक रूप से, महिलाओं को पुरुषों की तुलना में परिवार और समाज दोनों में अधीनस्थ भूमिका में रखा गया है। भारत की कुल जनसंख्या का 48.46ः। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में

देश की प्रगति के बावजूद, महिलाओं की स्थिति काफी हद तक अपरिवर्तित बनी हुई है। यद्यपि महिलाएं आज घर और कार्यबल दोनों में कई भूमिकाएं निभा रही हैं और उन्हें अधिक समानता दी जाती है, सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में सच्ची समानता अभी तक हासिल नहीं की गई है। यह लगातार असमानता मनुष्य के लिए आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक और साथ ही राजनीतिक अवसरों तक असमान पहुंच से उत्पन्न होती है। यह भी देखा गया है कि किसी भी देश ने, चाहे उसका प्रगति का स्तर कुछ भी हो, वास्तविक लैंगिक समानता प्राप्त नहीं की है, जब निर्णय लेने की शक्ति, जिसकी तुलना की जा सकती है, शिक्षा और उन्नति के लिए समान पहुंच और समाज के सभी क्षेत्रों में समान भागीदारी के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।

स्वयं सहायता समूह स्वयं सहायता समूह छोटे अनौपचारिक समूह होते हैं जो लाभ, एकजुटता और संयुक्त जिम्मेदारियों के पारस्परिक वित्तीय मदद के उद्देश्य से बनाए जाते हैं। लाभों में शामिल हैं बचत जुटाना, ऋण सुविधाएं और व्यापार गतिविधियों का पीछा करना। समूह आधारित परिप्रेक्ष्य न केवल गरीबों को छोटी बचत के माध्यम से पूंजी जमा करने में सक्षम बनाता है लेकिन उन्हें ऋण सुविधाएं प्राप्त करने में भी मदद करें। संयुक्त दायित्व के माध्यम से ये समूह संपाश्वक प्रतिभूति की समस्या पर काबू पाने अथवा उसे कम करने में गरीबों को समर्थ बनाते हैं और इस प्रकार उन्हें साहूकारों के चंगुल से मुक्त करते हैं। भीय उपर्युक्त कार्यकरण पर बनाए गए स्व–सहायता समूह गरीबों, विशेषकर महिलाओं तक प्रभावी ढंग से पहुंचने, बचत और ऋण जैसी सुविधाओं तक आसान पहुंच प्राप्त करने में और दीर्घावधि में उन्हें सशक्त बनाकर गरीबी उन्मूलन करने में सहायता करने में सक्षम रहे हैं।

स्वयं सहायता समूह चुनौतियों का सामना करने वाले व्यक्तियों के लिए एक मूल्यवान संसाधन हो सकते हैं, व्यावहारिक समर्थन और भावनात्मक एकजुटता दोनों प्रदान करते हैं। 1976 के बाद एसएचजी का विचार विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गया,जब से प्रो. बांग्लादेश ने माइक्रोक्रेडिट और महिलाओं के एसएचजी की खोज शुरू की। इस दृ ष्टिकोण ने बांग्लादेश में एक उल्लेखनीय परिवर्तन किया, जिसमें वंचित पृष्ठभूमि (सीआईआरडीएपी डेवलपमेंट डाइजेस्ट, 2000) से महिलाओं को सशक्त बनाकर गरीबी उन्मूलन पर ध्यान केंद्रित किया गया। एसएचजी सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विशेष रूप से ग्रामीण और हाशिए के समुदायों में। महिलाओं को एक–दूसरे का समर्थन करने और सामूहिक रूप से काम करने के लिए एक साथ लाकर, एसएचजी उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और समग्र कल्याण को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। एसएचजी अक्सर पैसे बचाने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं और छोटे ऋणों तक पहुंचने में भी मदद करते हैं, जिसका उपयोग वे व्यक्तिगत या व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए कर सकते हैं। यह वित्तीय स्वायत्तता महिलाओं को अपने आर्थिक विकल्पों पर नियंत्रण पाने में मदद करती है और दूसरों पर निर्भरता कम करती है। एसएचजी में महिलाएं माइक्रोलोन का उपयोग कर सकती हैं, जो अन्यथा वे संपार्श्विक या क्रेडिट इतिहास की कमी के कारण पारंपरिक बैंकों से प्राप्त करने में असमर्थ हो सकती हैं। ये ऋण और छोटी बचत उन्हें अपने छोटे व्यवसाय शुरू करने या आय–सृजन गतिविधियों में निवेश करने में सक्षम बनाती है। ये समूह अपने स्वयं के व्यवसाय शुरू करने के लिए उपकरण, कौशल और संसाधन प्रदान करके उद्यमिता को बढ़ावा देते हैं। विपणन, उत्पाद विकास और प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में पूंजी और प्रशिक्षण तक पहुंच के साथ, महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकती हैं और अर्थव्यवस्था में योगदान कर सकती हैं। यह वित्तीय स्वतंत्रता महिलाओं को आर्थिक निर्भरता से मुक्त होने में भी मदद करती है। पुरुष परिवार के सदस्य या पारंपरिक भूमिकाएं। कौशल विकास भी महिलाओं के जीवन का अभिन्न अंग है। एसएचजी अक्सर विभिन्न कौशल जैसे सिलाई, हस्तशिल्प, कृषि, वित्तीय साक्षरता, और यहां तक कि नेतृत्व में कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। ये कौशल महिलाओं को आत्मविश्वास हासिल करने में सक्षम बनाते हैं और घर और कार्यस्थल दोनों में उनकी उत्पादकता बढ़ाएं। कुछ एसएचजी साक्षरता और बुनियादी शिक्षा पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे महिलाओं को अपने ज्ञान और रोजगार में सुधार करने में मदद मिलती है।

इस समीक्षा का उद्देश्य ग्रामीण भारत, दक्षिण पूर्व एशिया और उप–सहारा अफ्रीका के अध्ययनों पर विशेष ध्यान देने के साथ आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक समावेश और सामुदायिक विकास पर स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के बहुआयामी प्रभाव का अध्ययन करना था। समीक्षा में वित्तीय स्थिरता, समूह गतिशीलता और लैंगिक समानता से संबंधित चुनौतियों का समाधान करने में एसएचजी की भूमिका का भी पता लगाया गया। कोंडल, (2014) ने आंध्र प्रदेश में मेडक जिले के गजवेल मंडल में रहने वाली आवासीय महिलाओं में एसएचजी का एक महत्वपूर्ण प्रभाव पाया। एसएचजी ने सिरसा जिले में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सकारात्मक सुधार किया, हरियाणा, (धैया एट अल। मिश्रा (2014) और गजभिये (2012) ने कहा कि एसएचजी ने न केवल पूरे परिवार की रहने की स्थिति को

बढ़ाया है बल्कि सामाजिक स्थिति और दृष्टिकोण में भी वृद्धि की है। एसएचजी का महिला सशक्तिकरण, विशेष रूप से सामाजिक स्थान, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक मुद्दों में निर्णय लेना (ईश्वरैया, 2014), (मुनिनारायणप्पा, 2013 और सिंह, 2013)। गुंटका (2014) में कहा गया है कि एसएचजी ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया और उन्हें स्वतंत्र रहने में भी मदद की। यह भी कहा कि सरकार को ऐसे समूहों में दलित महिलाओं को शामिल करने के लिए कदम उठाने चाहिए। कौर एवं अन्य (2014) द्वारा किए गए एक अन्य अध्ययन में भी कहा गया है कि महिला सशक्तिकरण में सुधार की बहुत गुंजाइश है। इसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना चाहिए और राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में माना जाना चाहिए। सिंह (2014) एसएचजी–बैंक संबंधों और ऐसे निर्णयों के कार्यान्वयन में भूमिका पर प्रकाश डालते हैं।

महिला सशक्तिकरण के माध्यम से, हम महिला शिक्षा के स्तर के साथ–साथ उनके रोजगार को भी बढ़ा सकते हैं जिसे सतत विकास के लिए आवश्यक घटक के रूप में जाना जाता है। एसएचजी का भारत में अस्तित्व का एक लंबा इतिहास रहा है। चौधरी, एट अल (2013)

मूर्ति (2013) ने सुझाव दिया कि राशि देने के लिए बैंकों की प्रक्रिया तेज और सरल होनी चाहिए। इंदुमति, एट अल। (2013) में कहा गया है कि शैक्षिक स्तर, काम के लिए समर्पण, सामाजिक शब्द, घर का माहौल और योजना महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोखंडे (2013) ने कहा कि एसएचजी महिलाओं को उनकी गरीबी को खत्म करने में मदद कर सकते हैं। साहू (2013) ने कहा कि महिलाओं को अधिक से अधिक होना चाहिए सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर के साथ–साथ सांस्कृतिक स्तर पर सशक्तीकरण। पवित्रा, एट अल (2013) ने सुझाव दिया कि नियमों और गतिविधियों को ग्रामीण क्षेत्रों की बेहतरी और अच्छाई के लिए महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। शर्मा, एट अल। (2013) ने सुझाव दिया कि महिलाओं को तकनीकी रूप से सशक्त बनाया जाना चाहिए ताकि वे अपने जीवन में बेहतर प्रदर्शन कर सकें। उमा, एट अल। (2013), पूर्णिमा (2013), जैन, एवं अन्य (2012) और यादव (2013) ने कहा कि एसएचजी महिलाओं को उनके वित्तीय संकट में मदद करता है और रोजगार, वित्तीय स्थिति, व्यय के साथ–साथ महिलाओं की बचत में भी उल्लेखनीय सुधार देखा गया। चक्रवर्ती (2013) ने इस बात पर प्रकाश डाला कि दूरदराज के क्षेत्रों में सरकारी बुनियादी ढांचे की अनुपस्थिति में आपातकालीन सहायता प्रदान करने में एसएचजी कैसे महत्वपूर्ण हो गए। भौमिक (2022) ने खुलासा किया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म एसएचजी सदस्यों को सरकारी योजनाओं में शामिल होने, शैक्षिक संसाधनों तक पहुंचने और अन्य समूहों के साथ ऑनलाइन सहयोग करने में सक्षम बना रहे हैं, जिससे सशक्तिकरण में वृद्धि हो रही है। पटेल और शर्मा (2023) ने पाया कि एसएचजी ने विकलांग महिलाओं के लिए अपने अनुभव साझा करने के लिए मंच बनाए, सहायता सेवाओं तक पहुंच, और उन गतिविधियों में संलग्न होना जो आय में वृद्धि कर सकते हैं, उनके सामाजिक एकीकरण और सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। बिजली, 2012य लोपामुद्रा, एवं अन्य, 2012 एवं देवी, (2012) ने कहा कि ये समूह एसएचजी महिलाओं को धन के संदर्भ में सशक्त बनाते हैं और उन्हें सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए कुशल बनाते हैं। शर्मा, 2012य कामिनी, (2012) ने समाज में महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक रूप से बनाकर स्वयं सहायता की भूमिका पर प्रकाश डाला।

विचार–विमर्श

स्वयं सहायता समूहों के बारे में चर्चा अक्सर सशक्तिकरण, व्यक्तिगत विकास और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए उनकी क्षमता पर केंद्रित होती है। जबकि स्थिरता, समूह की गतिशीलता और पेशेवर संसाधनों तक पहुँच जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, एसएचजी का प्रभाव विशेष रूप से जब अच्छी तरह से समर्थित हो, व्यक्तियों और समुदायों के लिए परिवर्तनकारी हो सकता है। उनकी सफलता की कुंजी अक्सर मजबूत नेतृत्व, चल रहे सदस्य जुड़ाव और समूह की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन सुनिश्चित करने में निहित होती है। कई अध्ययनों के रूप में (जैसे, कुमार और झा (2021, घोष और दत्ता (2020)) ने पाया कि डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों ने एसएचजी सदस्यों को वित्तीय सेवाओं तक अधिक कुशलता से पहुंचने में मदद की है और बचत और ऋण का प्रबंधन करने की उनकी क्षमता में सुधार किया है। मेहता, एवं अन्य (2021) ने पाया कि एसएचजी ने मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा करने, कलंक को कम करने और मानसिक स्वास्थ्य संसाधनों तक पहुंच में सुधार के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान किया। पटनायक (2020) ने पाया कि एसएचजी ने स्वच्छता और परिवार नियोजन के बारे में जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, खासकर दूरदराज के क्षेत्रों में जहां स्वास्थ्य सेवाएं सीमित थीं।

समीक्षा किए गए अध्ययनों से निरंतर यह पता चलता है कि एसएचजी आथक सशक्तिकरण, विशेषकर ग्रामीण और उपेक्षित समुदायों की महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुख्य निष्कर्ष घरेलू आय बढ़ाने पर एसएचजी के सकारात्मक प्रभावों को उजागर करते हैं, माइक्रोफाइनेंस के दृष्टिकोण में सुधार करना, और स्थानीय निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना। इसके अतिरिक्त, एसएचजी को सामाजिक पूंजी को बढ़ावा देने और साझा संसाधनों और सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से सामुदायिक सामंजस्य में सुधार करने के लिए पाया गया। हालांकि, समूह की गतिशीलता, वित्तीय स्थिरता और संस्थागत समर्थन से संबंधित चुनौतियों की भी कई अध्ययनों में पहचान की गई थी। कुल मिलाकर, निष्कर्ष ग्रामीण क्षेत्रों के विशेष संदर्भ में महिलाओं को सशक्त बनाने और सामुदायिक कल्याण को बढ़ाने में एसएचजी की परिवर्तनकारी क्षमता को रेखांकित करते हैं। जैसा कई अध्ययन (जैसे, श्रीनिवासन, 2013य (ख) भारत के राष्ट्रीय स्वास्थ्य अनुसंधान संगठन (आर चक्रवर्ती, 2004) ने यह दर्शाया है कि एसएचजी ऋण, बचत और आय–सृजन गतिविधियों तक पहुंच प्रदान करके आथक विकास के लिए प्रभावी तंत्र के रूप में कार्य कर सकते हैं। हालांकि, कुछ एसएचजी के भीतर वित्तीय साक्षरता और प्रबंधकीय कौशल की कमी, जैसा कि मिश्रा और साहू, 2015 द्वारा उजागर किया गया हैय वासुदेवन, 2012 का सुझाव है कि दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए क्षमता निर्माण पहल आवश्यक है। इसके अलावा, जबकि एसएचजी अक्सर महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं, उन्हें पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को तोड़ने और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में पूर्ण लैंगिक समानता प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसा कि खड़का और स्मिथ द्वारा बताया गया है (2009).जनागन और अमुथा, 2011 सौमित्रो, 2010) ने कहा कि एसएचजी ने महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया।

स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) आर्थिक अवसरों में सुधार और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देकर नीचे स्तर पर पड़े समुदायों, विशेष रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं। यह महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक रूप से विभिन्न मुद्दों पर निर्णय लेने के दौरान परिवारों में सशक्त बनने में मदद करता है। इन समूहों के माध्यम से महिलाएं स्वतंत्र हो गईं। महिलाओं को सशक्त बनाने में टेक्नोलॉजी की अहम भूमिका है। एसएचजी महिलाओं को उनकी वित्तीय मदद के लिए ऋण प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, एसएचजी को वित्तीय, तकनीकी और कुछ बैंक नीतियों से संबंधित कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तिकरण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हैं क्योंकि वे महिलाओं को अपनी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार करने के लिए एक बहुमुखी मंच प्रदान करते हैं। एसएचजी महिलाओं को निर्भरता से मुक्त होने, अपने अधिकारों का दावा करने और अपने समुदायों में एक मजबूत आवाज बनाने में सक्षम बनाते हैं। इन समूहों के माध्यम से, महिलाएं न केवल खुद को ऊपर उठाती हैं, बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन में भी योगदान देती हैं, पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देती हैं और एक अधिक न्यायसंगत समाज का निर्माण करती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

Anjugam, M., Ramasamy, C., and Bala Subramanian, R.,(2007). Impact of micro finance Programme in empowering women: evidences from Self-Help Groups in Tamil Nadu. Tropical Agricultural Research,19;346-58.

Anonymous (2011). Census of India, (2011). Retrieved from http://censusindia.gov.in/, on15hJuly,2011at5.00pm.

Ashokan, M. Ranganathan, G., lqbal, I.M. and Prabhu, J.V. (2008). Rural Women Self Help Group Members-A Profile Analysis. Madras Agricultural Journal,95(1-6):108- 113.

Behra, P. Satpathy, I., and Patnaik, C. M. (2022). Medical Assistance and Healthcare Services Facilitated by Self-Help Groups (Shgs) During Covid-19 In India. Journal of Medicinal and Chemical Science,,5(5) 571-580.DOl:10.26655/JMCHEMSCT.202 2.5.2

Bhatia, A. and Bhatia, N. (2002). Lending to groups-Is it worth while. Yojana, 42(1);32- 34.

Bhuwaneswary, G., Patil, A. and Hunsal, C.S. (2011). Comparative Study on Micro-credit Management of Self-Help Groups in Peri- urban and Rural areas, Kamnataka Journal of Agricultural Science, 24(2);188-192.

Bortamuly, D. (2005). A Study on Selected Self- Help Groups (SHGs) Engaged in Agro- based Enterprises in Sonitpur District of Assam. Unpublished M.Sc(Agri.)Thesis, Assam Agricultural University, Jorhat-13.

Chakraborty, D. K. (2012 &2013). The Role of Self-Help Groups (SHGs) in Poverty Alleviationin Rural West Bengal: A Study on Some Selected Districts. Business Studies XXXIII& XXXIV (1 &2):70-77.

Chaubey, A. (2019). "Impact of micro -finance on women entrepreneurship". M.Sc. (RM)Thesis. Chandragupta Institute of Management, Patna.

Choudhury, J. and Devi, R. (2009). Women's Participation in Economic Development:

Role of SHG; In Konwar, K. and S. Das (Eds). Role of Women in the Socio- economic upliftment of Assam, Purbanchal Prakash, Guwahati, Assam.

Dahiya, P. S., Pandey, N.K. and Karol, Anshuman (2001). Socio-economic evaluation of self-help groups in Solan district of Himachal Pradesh: Impact, Issues and Policy Implications. Indian J. Agril. Econ., 56(3,486-87.

Devi, N. (2006). Empowering Rural Women. In the Assam Tribune, Il. Patowary, M. Tribune Press, Guwahati, pp.4.

Feroze, S. M. and Chauhan, A. K. (2010). Performance of dairy Self Help Groups (SHGs) in India: Principal component Analysis (PCA) approach. Indian Journal of Agricultural Economics 65(2);308-20.

Garga, P. and R. Bagga. 2009. "A comparative study of opportunities, growth and problems of women entrepreneurs." Asia Pacific Business Review, 5(1).

Geni, S., Shafi, A., Akhter, S., and Habib, N. (2022). Empowerment of Women through Self-help Groups in India: A Review of Literature. JournalofEmerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 9,(9), www.jetir.org

Gupta, S. and Rathore, H.S. 2021. Socio Economic and political empowerment through self-help groups intervention: A study from Bilaspur, Chhattisgarh, India. Journal of Public Affairs, 21(1),2143-2148

Jha, D. (2001). SHG Heralding Emergence of Genuine Cooperative Movement in India, Paper presented atthe19thAnnual Convention of the Indian Society for Studies in Cooperation, held at Pune during February,2-4,2001

Lakshmi, R. and Vadivalagan, G. (2011). Impact of self help groups on empowerment of women:a study in

Dharmapuri district, Tamilnadu, Journal of management and Science, 1(2).

Lalitha, K. and Prasad, G. (2011). Impact of Women Empowerment and Role of SHGs in Value based Emancipation. Indian Streams Research Journal (ISRJ, 1(2);130-133.

Maheshwar, M. & Goyal, S. (2014). Role of Self Help Groups in Socio-Economic Empowerment of Women: A Review of Studies, Pacific Business Review Intemational Journal, 7(2).

Mehta,K.. A.K. and Gill, H.K.(2010). Management of Economic Activity in Women Self Help Groups. Indian Research Joumal of Extension Education 10(1); 58-61.

Mini K. Kuzhuvelil, Makesh, K.G.(2018). Financial Literacy Through Self Help Group (SHG) Bank Linkage Programme-A Case Study on Rural Women in Ernakulam District. International Journal of Management Studies, 5(1); 81-86, ISSN (Print) 2249-0302 ISSN (Online)2231- 2528, DOL: 10.18843/ijms/v5iS1/10, DOIURL:http://dx.doi.org/10.18843/ijms/ v5iS1/10

Mishra, D. K.. Malik, S., Chitnis,Paul, A.. Subham, D., and Das, S. (2021). Factors contributing to financial literacy and financial inclusion among women in Indian SHGs. Universal Journal of Accounting and Finance 9(4): 810-819, DOI: 10.13189/ ujaf.2021.090427

NABARD (1999).NABARD and Microfinance. Micro Credit Innovation Department; Mumbai, pp.51.

Nair, M. and Girija, B. (2005). Microfinance the New Development Paradigm for Poverty Eradication and Women's Empowerment. Kurukshetra, 53(6); 18-20.

Palani, S. and Balamurugan, K. (2016). A Study on Women Empowerment Through Self- Help Groups With Special Reference to Madurai District in Tamil Nadu. Shanlax International Journal of Arts, Science & Humanities, 4 (1), ISSN: 2321 -788X.

Panda (2017). "A rivew of role of gender equality and women empowermentin economicgrowthinIndia".https:// www.researchgate.net/publication/317166539

Pradeep and Rai (2019). "Women empowerment through self help groups: Intervention towards socio-economic welfare". M.Sc. Thesis, Srinivas Institute of Management Studies, Karnataka.

Raj, A. and Anurika, V. (2023). SHG for Women's- Contribution to Economic Development. International Journal of Innovative Research in Engineering & Management (IJIREM), 10(2), ISSN: 2350-0557

Routray, S. (2015). Enabling rural women as agent of social change by reinvigorating Self Help Groups: a qualitative analysis of SHGs in Odisha. International Journal of Reviews and Research in Social Sciences,3(3) DOL: 10.5958/2454-2687.2015.0000 2.7.

Santhosh Kumar K, Sreeramana Aithal, (2024). Financial Literacy for Economic Empower- ment:

Microfinance Initiatives in Indian SHGs, Poorna Prajna publication, vol.1, https://doi.org/10.26655/JMCHEMSC 1.2022.4.1210.5281/zenodo.13272905.

Vishnuvarthini, R. and Ayyothi, A. M. (2016). The Role of SHG in Women Empowerment- A Critical Review. IOSR Journal of Economics and Finance (IOSR-JEF, 7(3), 33-39, e-ISSN: 2321-5933, p-ISSN: 2321- 5925. www.iosrjournals.org